वैदिक विज्ञान की आधुनिक प्रामाणिकता

के0 के0 बाजपेई
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, गणित विभाग
बी0 एस0 एन0 वी0 पी0 जी0 कॉलेज, लखनऊ(उ0प्र0)–226001, भारत
kkbajpai.hodm@gmail.com

सार

आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों ने जहाँ वर्तमान में मानव के लिए जीविकोपार्जन के साथ–साथ जीवनयापन के नये आयाम उपलब्ध कराये हैं, जिससे मानव जीवन मशीनों के प्रयोग पर अधिक निर्भर हो गया है, जो आर्थिक रूप से खर्चीला साथ ही दुष्परिणाम का द्योतक है। परन्तु वर्तमान में विज्ञान जिस ज्ञान को मशीनों की सहायता से खोज रहा है, वह ज्ञान हमारे प्राचीन शास्त्रों जिनका उल्लेख हमारे वेदों में भी किया गया है; हमारे पूर्वजों को पौराणिक काल में आधुनिक विज्ञान से ज्यादा सरीक और परिष्कृत ज्ञान था, जिसका साक्ष्य प्रमाण सहित हमारे चारो युगों के वेद पुराणों मे जीवन दर्शन के चित्रण के साथ दृष्टिगोचर होता है। युगो उपरान्त आधुनिकता के मद में विरासत से मिले जीवन दर्शन, ज्ञान और विज्ञान की अनदेखी करते–करते जो प्रायः लुप्त हो गया, जिसका प्रमाण तुलसीदास जी द्वारा रचित रामचरित मानस एवं हनुमान चालीसा से ज्ञात होता है।

Modern authenticity of Vedic Science

K. K. Bajpai
Associate Professor and Head, Department of Mathematics
B.S.N.V. P.G. College, Lucknow(U. P.)-226001, India
kkbajpai.hodm@gmail.com

Abstract

The science of the Vedic period in current scenario seems powerful, accurate rather more advance and comprehensive during the period of our four ugas than the modern existing science exemplary by looking into our vedas, vedvyas's Mahabhart, Tulsidas's Ram Charit Manas & Hanuman Chalisa. There were several examples found regarding universe science, oceans science, physical science, chemical science, science and technology providing arms and aviation which are illustrated here, showing the authenticity of Vedic Science than Modern Science.

यह अद्भुत, आश्चर्यजनक एवं अचंभित कर देने वाली बात है कि जाने माने वैज्ञानिक स्टीफन हाकिंग, नासा के कुर्जनीक वैज्ञानिक प्रोफेसर रिचर्ड हंकिग सहित विश्व के अनेकों वैज्ञानिकों ने वर्ष 2100 तक विज्ञान प्रौद्योगिकी में प्रवेश कर अनेक नवीन परिष्कृत ऊचाइयों को छूने का दावा किया है जो आर्थिक तौर पर विश्व को जर्जर कर सकता है बल्कि यों कहें कि विनाश की ओर भी ले जा सकता है।

पर हमारे शास्त्रों में बिना मशीनों के पृथ्वी से ग्रहों, द्वीपों एवं समुद्री मार्गों की दूरियां का शत–प्रतिश विवरण सटीय गणितीय शास्त्रीय सूत्रों के माध्यम से मिलता है, जिसको आधुनिक मशीन उतना सटीक नहीं माप पाती है, जिनका वर्णन हमारे शास्त्रों में है, जिसका अध्ययन चोरी छिपे करने के लिए महाशक्तियां प्रयत्नशील है। हमारे ऋषि–मुनियों एवं शास्त्र रचयिताओं ने प्रत्येक युग में विज्ञान के अस्तित्व का परिचय पूरी प्रमाणिकता के साथ फहरा दिया था, चाहे चिकित्सा क्षेत्र, चाहे वायु सेवा हो, चाहे पृथ्वी से सौरमण्डल का अध्ययन हो, चाहे समुद्रीय विज्ञान हो, एवं उस समय आज से ज्यादा परिष्कृत हथियार ही रहे हों। उदारहणतः पृथ्वी से सूर्य की दूरी वैज्ञानिकों ने अथक अनुसंधान एवं परीक्षण कर लगभग 15करोड़ किलोमीटर मापी है जबकि एक साधारण से परिवार में जन्में अशिक्षित ज्ञान–विज्ञान की दक्षता के बिना अपने अलौकिक ज्ञान के माध्यम से रामचरित मानस के रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास जी ने विलक्षण खगोलीय ज्ञान के माध्यम से गणतीय आंकलन कर पृथ्वी से सूर्य की सटीक दूरी 15 करोड़ छत्तिस लाख किलोमीटर मापी, जिसका वर्णन रामचरित मानस एवं हनुमान चालीसा की इन पंक्तियों को एक गणितीय सूत्र तरह से लिखकर वर्णित किया है–

''युग सहस्त्र योजन पर भानु, लील्योताहिं मधुर फल जानु।'' (हनुमान चालीसा)

का विश्लेषण यह है कि भानु का अर्थ सूर्य, लील्योताहिं मधुर फल जानु का अभिप्राय हनुमान जी ने सूर्य को मधुर फल समझकर खा लिया या निगल गये। तुलसीदास नें यह बताकर सभी को स्तब्ध कर दिया था कि हनुमान जी ने पृथ्वी से छलांग लगाकर 15 करोड़ छत्तिस लाख किलोमीटर दूरी तय कर आकाश में जा कर सूर्य को निगल लिया था, इसका अभिप्राय यह भी है कि अंतरिक्ष विज्ञान का परिष्कृत ज्ञान भी उनको अलौकिक ज्ञान के माध्यम से ज्ञात था।

हनुमान चालीसा से ली गई उपरोक्त पंक्तियों का अभिप्राय पूर्णतः गणितीय सूत्र है, जिसका विश्लेषण सटीक रूप से इस प्रकार है, युग सहस्त्र योजन

पर भानु की गणितीय गणना इस प्रकार है–

= 1200 (युग) x 1000 (सहस्त्र) 1 युग
= 1200 (युग) x 1000 (सहस्त्र) x 8 मील (1 योजन = 8 मील)
= 9, 60, 000 मील
= 9,60,000 x 1.6 किमी (1 मील = 1.6 किमी.)
= 15,36,000 00 किमी.

इस तरह तुलसीदास जी ने अनेकों उदाहरण रामायण के प्रत्येक काण्ड में दिये हैं जिनमें मुख्यतः सुन्दरकाण्ड में वर्णित उनका ज्ञान त्रेतायुग में सटीक गणनाओं को चौपाई रूपी सूत्रों को प्रमाणित करता है जो पृथ्वी से सौर मंडलीय आधुनिक गणनाओं से ज्यादा सटीक है। इसी क्रम में तुलसीदास जी ने हनुमान जी को समुद्र पार कर लंका जाने के सदंर्भ का वर्णन करते हुए कहा–

''जो बांधाई सौयोजन सागर। करइ सो राम काजमति आगर।।''

जिसका गणितीय अभिप्राय समुद्र के दोनों तटों के बीच की दूरी यानि सौ योजन यानि चार सौ कोस, यानि आठ सौ मील, यानि 1280 किमी. जिसकी प्रमाणिकता श्री रामेश्वरम् धाम से श्रीलंकाई समुद्र तट की दूरी के रूप में विद्यमान है। तुलसीदास जी का ज्यामिति ज्ञान भी हनुमान जी के समुद्र पार कर लंका जाने के सम्बन्ध वर्णित निम्न प्रसंगों से ज्ञात होता है, जिसमें तुलसीदास जी ने हनुमान जी के समुद्र पार लंका जाने के समय सर्पों की माता सुरसा के प्रसंग के वर्णन में अपनी गणितीय आंकलन की सटीक दक्षता इन पंक्तियों के माध्यम से दर्शाया–

''योजन भरितेहिं बदनु पसारा। कपि तनु कीन्ह दुगुन विस्तारा।।
सोरह योजन मुख तेहिं ठहऊँ। तुरत पवनसुत बतिस भयऊ।। (दोहा 1 के उपरांत 4 चौपाई, सुन्दरकाण्ड)
''जस जस सुरसा वादनु बढ़ावा। तासु दून कपि रूप देखावा।।
सत योजन तेहिं आनन कीन्हा। अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा।। (दोहा 1 उपरांत 5 चौपाई, सुन्दरकाण्ड)

अर्थात सुरसा ने जब एक योजन, यानि चार कोस में मुँह फैलाया तब हनुमान जी ने अपना आकार दुगुना फैला दिया ताकि वह हनुमान जी को खा न सके, ऐसा न हो सकने पर सुरसा ने अपना मुंह सोलह योजन, यानि चौंसठ कोस फैलाया तुरन्त ही हनुमान जी ने अपना आकार बत्तीस योजन यानि 128 कोस का कर दिया, अन्ततः निराश हो कर सुरसा ने अपने मुंह का विस्तार सौ योजन यानि चार सौ कोस कर लिया तब हनुमान जी ने अपना आकार अति सूक्ष्म कर के सुरसा के मुंह जाकर बाहर आ गये। यह वृतांत ज्यामितीय आकार प्राकर का सटीक वर्णन करता है।

इन वृतांतों से यह ज्ञात होता है कि भौतिक विज्ञान आज भी कितना पीछे है। तुलसीदास जी यहीं नहीं रूकते, उन्होंने रामायण में कई अन्य वृतांतों के माध्यम से उस समय चिकित्सकीय सुविधा, आयुधो एवं उस समय आकाश मार्ग से जाने वाले यानों का भी सजीव वर्णन किया जो वर्तमान विज्ञान तकनीकी से ज्यादा परिष्कृत थे, जिनके कोई भी दुष्परिणाम नहीं थे। रामायण की इन चौपाइयों में वर्णित वृतांत के माध्यम से यह सिद्ध और प्रमाणित होता है।

वीरछाविनी छाड़िसि साँगी। तेजपुंज लछिमन उर लागी।।
मुरछा भई सक्ति के लांगे। तब चलि गयउ निकट भय त्यागे। (दोहा 53 के उपरांत चौपाई 4, लंकाकाण्ड)

मेघनाद और लक्ष्मण जी के युद्ध में जब मेघनाद को लगा कि खुद प्राण बचाना मुश्किल है तब मेघनाद ने वीरछाविनी शक्ति चलाई, जो लक्ष्मण जी के छाती में जा लगी और वे मूर्छित होकर गिर पड़े। मेघनाद क्षण भर खुश होकर उनके पास जा कर उन्हें उठा ले जाने के लिए उठाने की कोशिश करता है पर वह जरा सा हिला भी नहीं पाता तथा लजाकर चला जाता है। राम की सेना में हाहाकार मच जाता है, श्रीरामचन्द्र जी अति व्याकुल हो जाते हैं, तब तुलसीदास इन पंक्तियों के वृतांत में वैद्य एवं चिकित्सा के बारे में उल्लेख किया है–

जामवंत कह वैद सुषेना। लंका रहई को पठई लेना।
धरि लघु रूप गयउ हनुमंता। आनेउ भवन समेत तुरंता।। (दोहा 54 के उपरांत 4 चौपाई, लंकाकाण्ड)

श्री रामचन्द्र जी की सेना एवं स्वयं भगवान राम विलाप कर रहे हैं तब जामवंत जी ने लंका में रहने वाले सूषेन वैद्य को उपचार के लिए बुलाये जाने के लिए सुझाया, तब हनुमान जी अपना लघु रूप कर गये और सुषेन वैद्य को उनके घर समेत उठा लाये, तब सुषेन ने रामचन्द्र की चरण वंदना उपरांत औषधियां एवं उस पर्वत का नाम सुझाया जिस पर औषधि पाई जाती है जिसका वृतांत निम्न पंक्तियों में उल्लिखित है–

राम पदारविद सिर नायउ आई सुषेन।
कहा नाम गिरि औषणि जाहु पवनसुत लेन।। (दोहा 55, लंकाकाण्ड)

अंततः हनुमान जी उस पर्वत पर पहुंच जाते हैं लेकिन औषधि की पहचान न कर पाने की स्थिति में पूरा पर्वत ही उठाकर हवाई मार्ग से निहित समय में

लौट आते हैं जिसका वृतांत निम्न पंक्तियों में उल्लिखित है–

देख सैल न औषध चीन्हा। सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा।।
गहि गिरि निसि नम धावत भयउ। अवधपुर अपर कपि गयऊ।। (दोहा 57 के उपरांत 4 चौपाई, लंकाकाण्ड)

सूषेन वैद्य ने हनूमान जी द्वारा लाये गये पर्वत से वह औषधि निकाल कर उचित मात्रा में लक्ष्मण जी को पिला दी, जिससे वह चैतन्य हो कर उठ गये, भगवान राम और सम्पूर्ण रामचन्द्र जी की वानर और भालुओं की सेना प्रसन्न हो गई, यह वृतांत निम्न पंक्तियों से उल्लिखित होता है–

हरषि राम भेटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना।।
तुरत वैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लक्ष्मण हरषाई।। (दोहा 61 के उपरांत पहली चौपाई, लंकाकाण्ड)

तुलसीदास जी ने रावण के वध उपरांत विभीषण का राजतिलक कर लंका का राज्य सौंपने के उपरांत, राम, सीता, लक्ष्मण एवं समस्त वानर, भालुओं की सेना को लेकर लौटते वक्त लंका के राजा विभीषण ने आकाश मार्ग से जाने के लिए विशेष पुष्पक विमान उपलब्ध कराया, जिसमें रामचन्द्र जी की सम्पूर्ण सेना राम, सीता और लक्ष्मण जी के साथ बैठ सकते थे। उसके उपरांत भी उसमें बैठने की जगह उपलब्ध थी। इस बात का अभिप्राय निम्नलिखित पंक्तियों के वर्णन से सारगर्भित होता है–

अति सच प्रीति देखि रघुराई। लीन्हें सकल विमान चढ़ाई।
मन महु विप्र चरन सिरू नाई। उत्तर दिसिहिं विमान चलाई। (दोहा 118 के उपरांत पहली चौपाई, लंकाकाण्ड)

निष्कर्ष

इन वृतांतों के सार गर्भित उदाहरणों के उपरांत यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि तुलसीदास जी द्वारा राम चरितमानस में वर्णित वृतांतों में प्रमाणित जीवन दर्शन के आधार पर आज का भौतिक विज्ञान काफी पीछे है, जिसके अनेकों उदाहरण हमारे अन्य ग्रन्थों में भी मिलते हैं।

संदर्भ

1. तुलसीदास जी रचित रामचरितमानस
2. हनुमान चालीसा, हनुमाष्टक
3. वाल्मीकि जी रचित रामायण